फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

मिथ्या है माया

ईस्ट इंडिया कॉटन मिल ? नहीं - नहीं, यह तो फाइबर प्रोसेसर्स, टेक्नो हार्डवेयर, राजश्री टैक्सटाइल्स, न्यू इंडिया, न्यू ईरा, प्रेम टैक्सटाइल्स, नेशनल क्लॉथ, भारत क्लॉथ, कलकत्ता टैक्सटाइल्स, फरीदाबाद टैक्सटाइल्स, ...

नई सीरीज नम्बर 173 नवम्बर 2002

बदतर की सीमा नहीं

✱ लोग रोज आ रहे हैं, रोज जा रहे हैं। साल- छह महीने कहीं टिकने का जुगाड़ भी मुश्किल होता जा रहा है। दस दिन यहाँ, बीस दिन वहाँ काम किया – किराये का जुगाड़ हुआ और खुराकी का उधार छोड़ कर फरार हो जाते हैं। पक्के आदमी की जमानत के बिना अब उधार कोई देता ही नहीं। ✱ दिहाड़ी वालों की सँख्या बढ़ रही है। बहुत लोग अब चौक पर इक्ट्ठे हो रहे हैं और बड़ी सँख्या में खाली वापस जा रहे हैं। लैट्रिन का गड्डा खोदते हैं। सुबह 6 बजे प्रेस कालोनी पहुँच जाते हैं और 12 बजे तक बैठे रहते हैं। पहले महीने में बीसेक दिहाड़ी मिल जाती थी, अब 8- 7 मुश्किल से मिलती हैं। ✱ रेहड़ियाँ आती ही जा रही हैं। दिल्ली में ओखला फेज 1 में पहले जहाँ एक रेहड़ी खड़ी होती थी वहाँ अब 6 रेहड़ी खड़ी होती हैं। बीबी- बच्चों के साथ रेहड़ी पर कमाना, रेहड़ी पर रहना- सोना बढता जा रहा है। ओखला में हजारों ऐसे परिवार हो गये हैं जो रेहड़ी और पटरी पर जीने को मजबूर हैं। ✱ आदमी हफ्ते में चार धन्धे बदल कर भी गुजारा नहीं कर पा रहा। मरने- मारने की प्रवृत्ति तेजी से बढ रही है। ✱ पटरी पर 65- 70 वर्ष के वृद्ध गुटके बेच रहे हैं। अबोध बच्चे रेलों में नारियल- खीरा- मूँखफली बेच रहे हैं। कहाँ आ गये ? और, अब यहाँ के बाद कहाँ ? ✱ पुत्र पिता से बच कर रहने लगे हैं। हम एक ही छत के नीचे रहते हैं फिर भी 10 महीनों में बेटे ने मुझ से सिर्फ दो बार बात की है। ✱ काम नहीं मिलता अथवा काम करवा लेते हैं और पैसे नहीं देते। लखानी शूज में दो महीने से काम कर रहा था। ठेकेदार भाग गया। पैसे नहीं मिले। घरवालों से क्या कहूँ ? ✱ भूड़ कालोनी के पीछे नहर पर झुग्गी में रहता हूँ। पिता जी पागल हो गये हैं। माँ कोठियों में काम करती थी पर 15- 20 दिन से बीमार है। कल मैंने 16 घण्टे ड्युटी की। सुबह देर तक सोता रहा। खाना नहीं बना सका, वैसे ही ड्युटी आ गया। ✱ नौकरी की जलालतों से दिल इतना तिलमिला जाता है कि हम आपस में ही गुत्थम- गुत्थी कर लेते हैं। प्लेटिंग वर्कशॉप में तीन औरतें भी काम करती हैं। कल, 30 अक्टूबर को पता नहीं क्या बात हुई कि एक औरत ने तेजाब भरा गिलास पीने के लिए उठा लिया। लड़कों ने उसे रोका। ✱ हम जिस बाउन्ड्री में काम करते हैं वहाँ 6 वर्कशॉप हैं। हैल्पर को 1100 रुपये और कारीगर को 1700- 2000 रुपये महीना तनखा है। लेकिन एक वर्कशॉप वाले को छोड़ कर कोई भी समय पर तनखा नहीं देता। ✱ तीन नम्बर पहाड़ी पर झुग्गियों में एक कमरे में 6 रहते हैं। राशन- वाशन का सब सामान उधार आता है। महीने- भर काम करने के बाद भी तनखा नहीं मिलती तो बहुत परेशानी होती है। कहाँ जायें ? बम्बई- सूरत..... ✱ चार महीने नौकरी के लिये दिल्ली में तमाम प्रयास किये हैं परन्तु नौकरी नहीं मिली। विकट समस्या है। आत्महत्या भी विकल्प बन रही है।

.....यह भी टुकड़े हैं हमारी जिन्दगियों के।

उपरोक्त में तन की तकलीफों और मन की पीड़ा की एक झलक मात्र है। तन के दर्द से कहीं बहुत अधिक व्यापक व पैनी मन की व्यथा है। जबकि, मन को कुचल डालना तन को आराम का मैनेजमन्टी नुस्खा है। और, दुनियाँ- भर में वृहदतर आबादी की बढती तन- मन की पीड़ा के सरकारी समाधानों का एक उदाहरण है : अमरीका सरकार द्वारा बीस लाख "अपने नागरिकों" को जेलों में बन्द करना तथा विश्व के कौने- कौने में "अन्यों" पर बमबारी करना।

ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं की गतिक्रिया हमें इस मुहाने पर ले आई है। वर्तमान की तुलना में पिरामिडों- किलों- महलों में मूर्त तन- मन की पीड़ा बहुत बौनी लगती है। यह तो मण्डी और मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाली ऊँच- नीच की वर्तमान व्यवस्था है जिसने बद से बदतर को तीव्रतर निर्ममता से सीमाहीन प्रदर्शित कर विकल्पों के लिये प्रश्नों- प्रयासों को मनुष्यों के लिये अधिकाधिक तात्कालिक बना दिया है।

क्या करें ?

पृथ्वी के छह अरब निवासियों को " क्या करें?" का प्रश्न मथ रहा है। इस मन्थन को गति देना स्वाभाविक क्रिया बनती है। और, अनुभवों व विचारों के आदान- प्रदान इसके लिये प्रस्थान- बिन्दू हैं।

क्या- क्या हैं जो छह अरब पृथ्वीवासियों के बीच अनुभवों- विचारों के आदान- प्रदानों में बाधक हैं? हमारे विचार से आज प्राकृतिक की बजाय सामाजिक पहलू मुख्य बाधा हैं।

एक प्रमुख बाधा सामान्य जन द्वारा आम जन के अनुभवों व विचारों को महत्व नहीं दिया जाना है। ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार- स्तम्भों का निर्माण ही सामान्य जन को महत्वहीन घोषित करने से आरम्भ होता है। विभिन्न पिरामिडों के मुखियों को ही सत्ता- प्रतिष्ठान महत्व देते हैं। और, ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं में प्रभाव आँकने- नापने के ऐसे पैमाने प्रचलित किये गये हैं कि सिर- माथों पर बैठों की क्रियायें ही महत्वपूर्ण लगती हैं।

अतः सहज है एक प्रमुख बाधा को हटाना। मजदूरों- मेहनतकशों- गरीबों द्वारा अपने अनुभवों व विचारों को महत्व देना कठिन नहीं है। प्रत्येक में कँकड़ उठाने की क्षमता है। अरबों लोगों द्वारा कँकड़ उठाने की प्रक्रिया हमारी पीठों पर लदे हिमालयों को नेस्तनाबूद कर देगी। किसी द्वारा सूरज को मुँह में रख लेना, किसी द्वारा उँगली पर पर्वत उठा लेना सिर- माथों पर बैठों के किस्से हैं और उन्हीं को मुबारक हैं। (जारी)

छोटी जोंक

फरीदाबाद फैब्रिकेटर्स मजदूर : " प्लॉट 311, 312, 313 और 369 सैक्टर- 24 स्थित कम्पनी में 400 मजदूर काम करते हैं। कम्पनी ने स्वयं 30- 35 वरकर रखे हैं और बाकी की भर्ती सैक्टर- 7 की हिन्दुस्तान इन्डस्ट्रीयल सेक्युरिटी सर्विस तथा सैक्टर- 11 की सुपर इन्डस्ट्रीयल सेक्युरिटी सर्विस के जरिये की जाती है। ठेकेदारों ने जिन 6 लोगों को विभागों के इन्चार्ज बना रखा है वे भर्ती के समय हैल्परों को 300- 400 रुपये और ऑपरेटरों को 200- 300 रुपये हर महीने तनखा के समय देने को कह देते हैं। इसे वे भर्ती का कमीशन कहते हैं और तनखा बँटने के बाद अपनी- अपनी डिपार्टमेन्ट में वसूलते हैं। जो मजदूर (**बाकी पेज तीन पर**)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

... खतों से -पत्रों से...

✱... जिन मजदूरों को आपने विषय बनाया है यद्यपि वे इन मजदूरों(?) से फिर भी लाख दर्जे अच्छे हैं जो शहर में सैंकड़ों की सँख्या में हर दिन बिकने के लिये भीड़ जमाते हैं। खरीददार न मिलने पर घर जा कर पेट बाँधे सो जाते हैं।...

मेरा वास्ता तो इन निम्नतम श्रेणी के मजदूरों से भी नीचे के लोगों से है। मैं परिवार व मित्रों के बल पर अपनी सेवा संस्था ज्योति अकादमी के जरिये उन बच्चों को शिक्षा में नियोजित कर रही हूँ जिन्हें पेट पालने के लिये सूअरों- गिद्धों- कुत्तों के बीच कूड़ा- कचरा टटोलना पड़ता है, भिखारी या बन्धुआ मजदूर बनना पड़ता है।....

— नीलम, मेरठ

✱.... पूर्व में मैंने महिला बन्दियों के संग मुलाकातों का विवरण दिया था। उसके बाद मैं पुरुष बन्दियों से भी मिल पाई हूँ जो कि एक अधिकतम पाबन्दी वाले कारागार में हैं। मैं और विधि विद्यालय के अन्य छात्र ग्रेटरफोर्ड जेल में बन्द 15 पुरुषों से नियमित मिल रहे हैं। अधिकतर बन्दी आजीवन कारावास की सजा भुगत रहे हैं और उनकी रिहाई की सम्भावना नहीं है।... 22 वर्ष से जेल में बन्द चक के लिये सामान्य जन से यह मुलाकातें अत्यन्त प्रेरक अनुभव रहे हैं और इनके कारण कभी- कभी उन्हें स्वतन्त्रता महसूस हुई है....

... लोग जो 'खतरनाक', 'अपराधी' माने जाते हैं, ग्रेटरफोर्ड में बन्दी अपनी व्यथा को सहज ही आँसुओं में अभिव्यक्त करते हैं। उन क्षणों में मैं असहाय महसूस करती हूँ। लेकिन मैं इतना तो जानती ही हूँ कि कुछ मात्रा में मित्रता (बेशक कारागार में अन्तर्निहित अवरोधों और नियमों द्वारा सीमित) उनके सप्ताहों को बेहतर बनाती है, मेरों को तो यकीनन। बातचीतों के दौरान कई बार मैं जेल में बहुत सहज महसूस करती हूँ।...

... मैं कानून की पढाई जारी रखे हूँ। विधि के अध्ययन से हम न्याय की बजाय अन्याय के बारे में अधिक जान सकते हैं।.... कभी कानून एक नृशंस पशु लगता है जो व्यक्तियों को कुचलता है। लेकिन मैं आशा करती हूँ कि कानून की जानकारी कुछ हस्तक्षेप करने में योगदान दे सकती है। दुख और मन की तकलीफों से निपटने के लिये यह व्यवस्था इस कदर अपार्याप्त है कि मुझे आश्चर्य होता है। मैं भिन्न- भिन्न पुरुषों और महिलाओं से मिल रही हूँ जिनका जीवन नशाखोरी ने बर्बाद कर दिया— नशाखोरी जो विगत के अत्याचारों से उपजे गहन दर्द पर पर्दा डालती थी। और यह व्यवस्था ऐसे लोगों को कारागारों में बन्द करती है.....

— अनीसा, फिल्डेल्फिया, अमरीका

✱.... पढ कर माथा गर्म हो जाता है। इच्छा होती है कि मैं भी इन वरकरों के संघर्ष में शामिल होऊँ! परन्तु शायद मैं यह अब कर नहीं पाऊँगा .... 68 वर्ष की आयु और अनेक बीमारियों से ग्रस्त .....

— बाबू लाल, मंदसौर

✱ मजदूर समाचार पढ- पढ कर दिमाग फिर गया है मेरा। 56 साल बाद गरीब और मेहनतकशों का यह हाल .... वास्तव में आतंकवादी और आत्मघाती दस्ते तो इनके बनने थे.... वामपंथी तो सभी गाँधी की सन्तानें बन गये हैं, बिड़ला के चमचे और सिर्फ ऊपरी नेतागिरी करके पूँजीपतियों से साँठगाँठ करते रहते हैं। कहाँ है मार्क्स... ये लातों के भूत तो हिंसा, हाँ- हाँ हिंसा से ही मानेंगे — गाँधीवाद के ढकोसले से नहीं।

— बुजुर्ग कृष्ण चन्द्र, इन्दौर

विवश
कमजोर
या फिर
पागल कहूँ मैं उसको ?
बँगाली में बोलती
फिर चुप !
बगल में दूसरी औरत
हड्डियों का ढाँचा।
फुटपाथ फल मण्डी का
बहती गन्दी नालियाँ
टूटी चौकी पे बैठी वो
सुनती सब की गालियाँ
बुनती- चुनती
अँगूर के दाने।
करीब है दुर्गन्ध के
पर अहसास नहीं
या फिर विमुख है।
आशा की किरण
आँखों में लिये
चुन डाले
अच्छे- अच्छे दाने
सड़े अनार के।
एक आम को
काट- छाँट कर खाया
चाकू पल्लू में पौंछ
बटुये में पहुँचाया।
बटुआ.... मिन्नी अटैची
पान- बीड़ी- लाइटर.
पैसा- चौकी- कैंची।
बीड़ी निकाल
लाइटर से सुलगाई
एक मटमैला मस्त
दौड़ा- सा आया
साथ निभाने की
रस्म अदा की
हवा में
धुँआ उड़ाया।
चलने लगी
वो माया।

— ओम प्रकाश,
ट्रक ड्राइवर, कलकत्ता

✱.... फिलहाल जिन्दा रहने के लिये ड्राइवरी के सिवाय मेरे पास कुछ नहीं है। इसलिये ड्राइवरी के लिए भाग- दौड़ करना मेरी मजबूरी है।.... गाड़ियों पे रोजगार नहीं मिलता है तो सिर्फ भूख से मरने की सम्भावना रहती है। लेकिन जब ड्राइवरी करते हैं तब मरने की कई सम्भावनायें पैदा हो जाती हैं — एक्सीडेन्ट से, लूटपाट से, पुलिस के अत्याचारों से.. .. गाड़ी के पहिये से भी कम अहमियत होती है हमारी। कई जगह हैल्परों और ड्राइवरों को मारते- पीटते भी हैं। लेकिन रोजी- रोटी का भय इस कदर दिलोदिमाग में समा गया है कि दारू, गाँजा, भाँग, अफीम, डोडा के सहारे सब हजम कर जाते हैं। क्यूँ हजम कर जाते हैं ? ये मुझे नहीं पता। जबकि, मौत के सभी गेट खुले पड़े हैं। जीवन मौत के मुँह में है।....

— अजय, ओखला, दिल्ली

✱.... मजदूरों के हित की लड़ाई लड़ने वाले अधिकांश संगठन ही मजदूरों के अहित के कारण हैं। इनका स्वार्थ सर्वोपरि है, कोई मजदूर नहीं। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये गिरगिटी अन्दाज में जीने की कला में ये पारंगत होते हैं। इनके ऊपर अंकुश रखने वाली पैनी नजर की आवश्यकता है।....

— बृजेन्द्र बैरागी, सागरपाली, बलिया

✱.... मैं चाहता हूँ कि हर व्यक्ति एक- दूसरे से प्यार करे। उसकी सहायता करें जिसका नैतिक पतन हो रहा है ताकि पतन रुक जाये और वह अपनी घटिया मानसिकता को त्याग दे।

मुख्य लक्ष्य हर आदमी को एक- दूसरे से जोड़ना है। हर कोई धर्म, देश, लिंग और उम्र की सीमाओं से ऊपर उठ कर एक अच्छा जीवन जी कर इस दुनिया से जाये।....

— विनोद, गोहाना, सोनीपत

✱.... ग्रीष्म में एक सप्ताह के लिये हम फ्रान्स गये जो कि बच्चों के लिये बहुत उत्प्रेरक था। हमें बहुत मजा आया हालाँकि नील की काम के बारे में चिन्ताओं और विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिये ई- मेल (कम्प्युटर) पर समय व्यतीत करने ने मजा कुछ किरकिरा किया। इस सब आधुनिक टेक्नोलॉजी का अर्थ है कि व्यक्ति चँगुल से निकल नहीं सकता ! मेरे पास मोबाइल फोन नहीं है, मैं कम्प्युटर का प्रयोग नहीं कर सकती — और, मुझे इस पर गर्व है !...

— लिलि, हाइवाइकोम्ब, इंग्लैण्ड

✱भारत में बहनो और भाइयो, मेरा नाम कैसिडी व्हीलर है और मैं अमरीका में एक राजनीतिक बन्दी हूँ। दाल- सब्जी की दुकान से मामूली चोरी के आरोप में मुझे साढे आठ वर्ष के कारागार की सजा दी गई है।... पता "डू और डाई" (विश्व में सत्ता- विरोधी क्रिया की वार्षिकी) के अंक 9 में मिला और मैं भारत में आन्दोलन के लिये अपना समर्थन व्यक्त करता चाहता हूँ तथा संग ही संग चाहता हूँ कि बन्दी कार्यकर्ताओं से पत्रव्यवहार/समर्थन वाली तालिका में मेरा नाम जोड़ा जाये। मैं फिलहाल बन्दी कार्यकर्ताओं के लिये विश्वव्यापी विशाल साधन/सम्पर्क तालिका तैयार कर रहा हूँ।... सहानुभूति रखने वाले संगठनों की सूची भेजें. .....

— कैसिडी, ऑनटेरियो, अमरीका

✱दूरदराज बस्तर से ले कर सरगुंजा, रायगढ़, दुर्ग, राजनादगाँव, धमतरी, बिलासपुर से आये हजारों लोगों ने जल, जँगल, जमीन पर हो रहे हमलों तथा वनों से सामुहिक बेदखली के नोटिसों के खिलाफ 17 अक्टूबर को छत्तीसगढ की राजधानी रायपुर में सभा की। —राजीव कुमार, रायपुर

कानून...

शक्ति इंजिनियरिंग मजदूर : " प्लॉट 79 सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1400 रुपये महीना तनखा देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड किसी भी वरकर को नहीं, पी.एफ. की पर्ची भी नहीं। सिंगल रेट से पेमेन्ट पर ओवर टाइम काम करवाते हैं – इस हिसाब से भी जुलाई से ओवर टाइम के पैसे नहीं दिये हैं। अगस्त व सितम्बर की तनखायें भी आज 22 अक्टूबर तक हमें नहीं दी हैं। श्रम विभाग में शिकायत की है।"

भोगल्स शूज वरकर : " प्लॉट 26 डी.एल.एफ. एरिया स्थित फैक्ट्री में सितम्बर की तनखा हमें आज 22 अक्टूबर तक नहीं दी है। दो साल का बोनस भी नहीं दिया है। हमने श्रम विभाग में शिकायतें की हैं।"

प्रेसकास्ट मजदूर : "प्लॉट 46 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में काम करते 200 मजदूरों में एक- दो परमानेन्ट है, 50 कैजुअल हैं और 150 को ठेकेदारों के जरिये रखा है। सिंगल रेट पेमेन्ट पर हर रोज 4 घण्टे ओवर टाइम काम करना अनिवार्य बना रखा है। पचास को 1500- 1800 रुपये और 150 को 1100- 1500 रुपये महीना तनखा देते हैं तथा 150 को ई.एस. आई. कार्ड नहीं दिये हैं। सितम्बर की तनखा कम्पनी ने आज 18 अक्टूबर तक नहीं दी है।"

मेगा फोर्ज वरकर : " प्लाट 9 बी सैक्टर- 27ए स्थित फैक्ट्री में 7 परमानेन्ट और ठेकेदार के जरिये रखे गये हम 43 वरकर काम करते हैं। हम बरसों से काम कर रहे हैं फिर भी हमें ई.एस.आई. का कच्चा कार्ड दिया है। हमें बोनस देते ही नहीं। सिंगल रेट पर ओवर टाइम काम करवाते हैं। सितम्बर की तनखा 16 अक्टूबर को जा कर दी। मैनेजर संजय शुक्ला बहुत उल्टा बोलता है, भद्दी हरकतें करता है, हाथ उठा देता है।"

सुपर आटो इलेक्ट्रिकल्स वरकर : " प्लॉट 9 जे सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे गये हम 75 मजदूरों से रोज 10 घण्टे ड्युटी ली जाती है। दस घण्टे प्रतिदिन के महीने में हमें 1800- 2200 रुपये देते हैं। हम में से कुछ को ई.एस.आई. कार्ड दिये हैं और कुछ को नहीं।"

कर्मा प्रोसेसर्स मजदूर : " 14/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हर रोज 12 घण्टे की ड्युटी है। परमानेन्ट 250 को 12 घण्टे के 3300 रुपये महीना और ठेकेदारों के जरिये रखे गये 150 मजदूरों को 12 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी के 2100 रुपये महीना देते हैं। कुछ को ही ई.एस.आई. कार्ड दिये हैं।"

क्लच आटो वरकर : " सितम्बर का वेतन कम्पनी ने 14 अक्टूबर को देना शुरू किया। पूरे महीने तनखा बँटती है – दस- बीस हजार आता है और खत्म। हर मजदूर अपने नम्बर की बाट जोहता है।"

सिराको आटो मजदूर : " प्लॉट 59 सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री को मैनेजमेन्ट ने दिसम्बर 1986 में बन्द कर दिया। कम्पनी ने 1984- 86 का हमारा प्रोविडेन्ट फण्ड जमा नहीं करवाया। भविष्य निधि अधिकारी 17 साल से हमें बेवकूफ बना रहे हैं। तीन- तीन बार पी.एफ. वालों ने हमारे फार्म वापस भेज दिये हैं।"

छोटी जोंक....(पेज एक का शेष)

उन्हें पैसे देने में आनाकानी करता है उसे वे परेशान करते हैं और फिर भी नहीं दे तो नौकरी से निकाल देते हैं। हाल ही में मजदूरों ने दो बार मुजेसर थाने में लिखित शिकायत की। पुलिस कम्पनी में आई थी और कम्पनी ने पुलिसवालों का मुँह बन्द कर दिया। एक मजदूर ने कम्पनी चेयरमैन के छोटे बेटे को शिकायत की तो वह बोला कि 100- 200 दे कर तू भी औरों की तरह नौकरी करता रह।"

सुपर फाइबर लिमिटेड वरकर : " इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित जूट मिल में हर रोज 10 घण्टे की ड्युटी लेते हैं। महीने में 26 दिन 10 घण्टे की ड्युटी के बदले रजिस्टर पर ऑपरेटरों का वेतन 2800 रुपये लिखते हैं। इन 2800 में से 300 रुपये प्रोविडेन्ट फण्ड और ई.एस.आई. के नाम पर काट लेते हैं। ऐसा करने पर भी 2500 रुपये बचते हैं पर हमें देते 2100 रुपये ही हैं – हर महीने हर मजदूर के 400 रुपये ऐसे ही खा जाते हैं। चार- पाँच साल से किसी भी वरकर को प्रोविडेन्ट फण्ड की पर्ची नहीं मिली है – पता नहीं पी.एफ. जमा भी कर रहे हैं कि नहीं।"

ट्रक ड्राइवर

(पत्र) यहाँ बाम्बे- नागपुर- कलकत्ता रूट पर एक ड्राइवर के साथ सैकेण्ड ड्राइवर की हैसियत से काम पर लग गया हूँ।

पहले से गम्भीर होती समस्याओं के मध्य ड्राइवरों की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। उपेक्षित होते ड्राइवरों में मानसिक, शारिरिक, आर्थिक असन्तुष्टि व्याप्त है। ऐसे माहौल में बातचीत के दौरान कुछ लोग मार- काट, लूट- खसोट की ओर उन्मुख होते नजर आते हैं, कुछ लोग घर पलायन करना चाहते हैं तो कुछ लोग अन्य विकल्प तलाशते हैं। समस्या बहुत- ही नाजुक है। नतीजा यह है कि आपसी मनमुटाव, झगड़ा, शिकायत, विरोध फैला हुआ है।

हम लोग अक्सर नागपुर के इर्द- गिर्द से गाड़ी लोड करते हैं और खाली भी करते हैं। इस समय नागपुर से सन्तरा, मौसम्बी, अनार आदि कच्चा माल कलकत्ता के लिये जाता है। नागपुर से कलकत्ता का 15,000 रुपये खर्चा मिलता है। आर.टी.ओ., लोडिंग, अनलोडिंग, बार्डर खर्च, पंचर हमें अलग से मिलता है। बाकी उसी पैसे में हमें सारा खर्च वहन करना पड़ता है।

नागपुर मण्डी से अगर हम लोड करते हैं तो काँटे का चार्ज, लेबर को चाय- पानी हमें देना पड़ता है। 1200 किलोमीटर के सफर को 36 घण्टे में तय करने पर हमें राकेट के नाम पर 1500- 2000 रुपये का इनाम देते हैं। समय पर पहुँचने पर भी 50- 100 रुपये इनाम से काट भी लेते हैं। इसमें कई ड्राइवर दुर्घटना के भेंट चढ़ जाते हैं। चौथे दिन पर 500 रु. इनाम लगाते हैं।

सफर में भी मुश्किलों का अम्बार है। गर्मी सर्दी हो या बारिश, हमें चलना ही पड़ता है। गाड़ी के अन्दर इन्जन की उमस – रहना, सोना बड़ा तकलीफदायक होता है। हाथ- पाँव, चेहरा सुर्ख हो जाते हैं। खाने- सोने का अनिश्चित टाइम हमें पेट के रोगी बना देता है। नहाना तो दो- दो, तीन- तीन दिन बाद नसीब होता है। पैसे बचाने के चक्कर में हमारी दुर्गति होती है। रास्ते में गाड़ी खराब हो जाने पर चटकती धूप में भी हम मरम्मत करते हैं।

हर बार्डर पर आर.टी.ओ., एम.बी.आई. बड़ी बदतमीजी से पेश आते हैं। बार्डरों पर हमें इनसे बचाने के लिये दलाल कुकरमुत्तों की तरह फैले हुये हैं। महाराष्ट्र–100 रु., छत्तीसगढ–300 रु., उड़ीसा–350 रु., बंगाल 100 रुपये गाड़ियों को पास कराने के लिये दलाल को देने पड़ते हैं। कई जगह टोल टैक्स, पुल टैक्स बूथ लगे पड़े हैं। इन सबसे अलग, आर.टी.ओ. हर स्टेट में तीन- चार जगह एन्ट्री के नाम पर पैसे वसूलने खड़े रहते हैं।

पुलिस- पब्लिक हमें हेय दृष्टि से देखती हैं। कई घटनाओं में पब्लिक ड्राइवरों को अधमरा करके छोड़ती है या मार ही देती है।

दिन में पुलिस- आर.टी.ओ. का डर बना रहता है तो रात में चोरों का डर रहता है। ऐसी घटनायें रोज होती हैं इसलिये मजबूरन चलना ही पड़ता है। अब पहले से अधिक चोरी की घटनायें होती हैं – वहाँ भी जहाँ पहले नहीं होती थी। अब तो दिन में ही गाड़ी के आगे गाड़ी लगा कर लूट लेते हैं।

कलकत्ता मण्डी (मछुआ) में फैली गन्दगी के बीच हमारी गाड़ी लगवाके खुली बिक्री करते हैं। हम साफ पानी, खाने के लिये तरस जाते हैं। गाली बेवजह ही दे देते हैं, मार देते हैं, पैसे वसूलते हैं। मसलन, गाड़ी लगाने पर 50 रु., निकालने पर 20 रु., पार्किंग के 150 रु., दरबानी के 100 रु., पुलिस का 20 रुपये चन्दा आदि। जेहन कुन्द हो जाता है।

हम गाड़ी छोड़ कर कहीं आ- जा नहीं सकते, घूम- टहल नहीं सकते। हमारे लिये मनोरंजन के सारे साधन बन्द हैं। ऐसे में नशाखोरी, जुआखोरी, वेश्यावृत्ति आदि बुराई में लोग लिप्त हो जाते हैं।

कम्पनी खर्चे में से काट लेती है। गाड़ी नहीं चलाने की धमकी देना और माँ- बहन की गाली उनके लिये आम बात है। जल्दी के फेर में हाथ गँवा बैठे, पैर कटवा लिये ड्राइवरों की हालत देखी नहीं जाती। जो ड्राइवर एक्सीडेन्टों में मारे गये हैं उनके परिवारों की स्थिति बहुत ही दयनीय है।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

अध्यापक-शिक्षिका

✱ सरकारी अध्यापक : "जनता के हम पर अभियोग हैं कि हम पढाते नहीं ; ड्युटी पर आते नहीं , तनखा उठाते हैं ; शराब पीते हैं ; स्थानीय राजनीति में भाग लेते हैं ; आपस में पार्टीबाजी रखते हैं ; परीक्षा में नकल कराते हैं ; सब को उत्तीर्ण कर देते हैं; बच्चों से पैसे एकत्र कर खाते हैं। सरकार हम पर आरोप लगाती है कि हम कम पढाते हैं ; हमारे परीक्षा परिणाम प्रायवेट के मुकाबले खराब हैं; यूनियनबाजी - राजनीति में समय व्यर्थ गँवाते हैं ; बच्चों का सर्वांगीण विकास नहीं करते।

"प्रशिक्षित होने के बावजूद तीस वर्ष पहले बरसों बेरोजगारी भुगत चुका और फिर दीर्घकाल से राजकीय विद्यालयों में पढाने के मेरे अनुभव कुछ और ही कहते हैं तथा शायद वास्तविकता के अधिक निकट हैं।

" 'पढो अच्छे जीवन के लिये' की तो बात ही छोड़िये , ' पढोगे तो नौकरी मिलेगी' की बात मेरे ही गले नहीं उतरती , छात्रों से कैसे कहूँ ? और फिर , बच्चे बेरोजगारी की हकीकत से वाकिफ हैं। विद्यालय अधिकाधिक बोझिल स्थान बन रहे हैं और घुटन - खीज में बच्चे तथा अध्यापक क्या - कुछ नहीं करते।

" हरियाणा में सरकारी अध्यापकों की ही बात करता हूँ। हम ' काम नहीं करते' वालों पर पठन - पाठन के अतिरिक्त वाले काम को ही पहले देखिये :

"पँचायत , विधान सभा , संसद के चुनावों में सरकारी अध्यापकों की निर्वाचन ड्युटी लगती है। तीन रिहर्सल तथा चुनाव - प्रक्रिया में एक चुनाव ही एक महीना खा जाता है। और फिर , कश्मीर - असम में निर्वाचन ड्युटी के लिये धमकी दी जाती है कि वहाँ जाओ या फिर इस्तीफा दो ! जनगणना ; आर्थिक गणना ; 6 से 14 वर्ष के बच्चों की स्थिति का सर्वेक्षण ; मतदाता सूचियाँ; फोटो पहचान - पत्र ; अनुसूचित जाति , पिछड़ी जाति , लड़के - लड़कियों की सँख्या , स्कूल छोड़ने वाले बच्चे , निजी विद्यालयों की गिनती वाले अनेकों आँकड़े ; पल्स पोलियो अभियान ;.. फरमान डी.सी. का रहता है : अनिवार्य , सर्वोपरि है। लेखा - परीक्षा। विभागीय निरीक्षण। परीक्षा - मूल्यांकन : पहले एक परीक्षा होती थी , अब सरकार ने वर्ष में 4 परीक्षा अनिवार्य कर दी हैं।

" हर महीने विद्यालय की फीस के साथ हमें आदेशानुसार अतिरिक्त शुल्क लेने पड़ते हैं : रेड क्रास फण्ड ,खेल के लिये पैसे , सूखा व बाढ राहत फण्ड , आपातकालीन फण्ड , अध्यापक कल्याण फण्ड , छात्र कल्याण फण्ड , जनहित बीमा योजना किस्त, सार्वजनिक बीमा योजना किस्त , पी टी ए फण्ड ... इन पैसों को छात्र रिश्वत लेने के तौर पर लेते हैं और हमारे अनुरोध को , दबाव को हेय दृष्टि से देखते हैं।

" राजकीय विद्यालयों में तीन तरह के अध्यापक हैं : 89 दिन के अनुबन्ध वाले , एडहॉक और नियमित। पाँच साल से लगातार अनुबन्ध पर 5500 हैं जिन्हें नियमित अध्यापकों के आधे वेतन से भी कम वेतन देते थे। हाई कोर्ट - सुप्रीम कोर्ट के फैसलों के बाद बराबर वेतन देने लगे हैं। हरियाणा में 6000 एडहॉक अध्यापक 1992 से लगातार काम कर रहे हैं। पेन्शन के लिए यह सर्विस गिनी नहीं जाती। मेडिकल छुट्टियाँ नहीं। प्रधानाचार्य का दबाव झेलना। नौकरी से निकाल दिये जाने का डर। अनुबन्ध वाले और एडहॉक अध्यापकों में हीन भावना व्यापक है।

" हरियाणा के सरकारी विद्यालयों में डेढ लाख के करीब नियमित अध्यापक हैं। अधिकांश जिस पद पर लगते हैं उसी पर रिटायर होते हैं। आमतौर पर पुश्तैनी रिहाइश से दूर विद्यालयों में लगाया जाता है और इसमें खूब राजनीति होती है। निवास स्थान की समस्या रहती है। गाँवों में पढाने वाले शिक्षकों की भी कोशिश शहर में निवास करने की होती है। और , आवागमन में खतरों के दृष्टिगत जेब में पता लिख कर रखते हैं ताकि परिवार को खबर तो हो सके।

" इधर तार्किककरण की चर्चा ने सब अध्यापकों को और भयभीत कर दिया है। तुलनात्मक परीक्षा - फल दिखाते हैं, निजी संस्थानों को जबरन मुकाबले में लाया जा रहा है। बात की जा रही है 60 - 65 बच्चों पर एक अध्यापक की अनिवार्यता की जबकि सरकारी विद्यालयों में अभी ही एक अध्यापक को 400 बच्चे तक सम्भालने पड़ रहे हैं। अध्यापकों के निर्धारित स्थान बड़ी मात्रा में रिक्त पड़े हैं और सरकार स्थानों को घटा रही है। सरकार पर पेन्शन तक का भरोसा नहीं रहा। पैसे नहीं हैं का रोना रो कर जनरल प्रोविडेन्ट फण्ड डुबाने का सिलसिला शुरू है - राजस्थान सरकार जी.पी.एफ. के बदले जैसलमेर - बाड़मेर में जमीन लेने को कह रही है। और, हम सब को डर है कि बच्चों की नौकरी नहीं लगेगी।"

✱ डी.ए.वी. विद्यालय अध्यापक : "हमारी तनखायें बच्चों की फीस में से निकलती हैं। शताब्दी पब्लिक स्कूलों में प्रिन्सीपलों को डी. ए. दिया जाता है पर स्टाफ को नहीं। मैनेजमेन्ट कहती है कि पैसे की तंगी है लेकिन शानशौकत पर खूब खर्च किया जाता है। अध्यापकों को ग्रेड देने में मनमर्जी बरती जाती है। बरसों से कनफर्म को भी नौकरी से निकालने की धमकी देते हैं। छुट्टियों में भी ड्युटी करवा लेते हैं और बदले में छुट्टी नहीं देते बल्कि कहते हैं कि डी.ए.वी. इम्पलाई 24 घण्टे का इम्पलाई है। लगता है कि इसीलिये आया , चपरासी , स्कूल बस कन्डक्टर से विद्यालय के कार्य करवाने के बाद प्रिन्सीपल अपने घर - परिवार का काम करवाते हैं।"

✱ प्रायवेट स्कूल शिक्षिका : "गली - गली में स्कूल खुल गये हैं। इन में ज्यादातर लड़कियाँ पढाती हैं। वेतन ? हमें तीन सौ से पाँच सौ रुपये महीना तनखा देते हैं। कुछ स्कूलों में तो 300 से भी कम देते हैं। और यह तनखायें भी कई स्कूलों में दो - तीन महीने बाद देते हैं। घर आ कर हम ट्युशन करती हैं। पाँच - छह बच्चों को इक्ट्ठा पढाती हैं - पहली कक्षा से छोटे एक बच्चे के 20 - 25 - 30 रुपये महीना। चिल्ला - चिल्ला कर हमारा दिमाग खराब हो जाता है। और माँ कहती हैं कि हम घर के काम के हाथ नहीं लगाती। पढाने के लिये हम साफ - सुथरे कपड़े पहनती हैं , सजती भी हैं , और यह इज्जत का काम माना जाता है !"

अनुभव

आटोपिन्स मजदूर : " मथुरा रोड़ स्थित कम्पनी के सैकेन्ड प्लान्ट में तनखा के लिये हम ने 4 दिन हड़ताल की। नेतृत्व के लिये इस बार हम ने यह सोच कर तीन कैजुअलों को चुना था कि वे कम्पनी के दबाव में नहीं आयेंगे। लेकिन इन तीन लीडरों ने कम्पनी से सौदा कर लिया और कल , 18 अक्टूबर को हड़ताल तुड़वा कर चलते बने। तीनों लीडर कम्पनी से दो - तीन हजार फालतू ले कर चले गये। हमें आज 19 अक्टूबर तक अगस्त व सितम्बर की तनखायें नहीं दी गई हैं। सौ द्वारा पाँच को बागडोर सौंपना नहीं चल सकता। हमें अन्य रास्ते ढूँढने होंगे।"

हाई पोलीमर लैब्स वरकर : "सैक्टर - 25 स्थित फैक्ट्री में बरसों से काम कर रहे 250 मजदूरों को कम्पनी ठेकेदार के वरकर कहती थी। यूनियन ने इन मजदूरों को परमानेन्ट करवाने के नाम पर 29 अगस्त से हड़ताल करवाई। फिर 4 सितम्बर को ' फैसला हो गया' कह कर साँय 4 बजे से यूनियन ने फैक्ट्री में काम शुरू करवा दिया। कम्पनी ने हड़ताल के लिये परमानेन्ट मजदूरों की 16 दिन की तनखा काट ली है और ठेकेदारों के बताये जाते 250 मजदूरों में से किसी को भी ड्युटी पर नहीं लिया है। जबकि, यूनियन ने कहा था कि 80 को अभी से तथा बाकी को बाद में परमानेन्ट करने का समझौता हुआ है। अब यूनियन उन 250 मजदूरों का जिक्र ही नहीं करती - जिन 80 को तत्काल परमानेन्ट का झुनझुना पकड़ाया था वे ही चक्कर काट रहे हैं। हम परमानेन्ट वरकरों की 16 दिन की तनखा काट लिये जाने के खिलाफ यूनियन ने श्रम विभाग में शिकायत की है।"

जुलाई माह से मजदूरों को देय महँगाई भत्ते की राशि की जानकरी फरीदाबाद श्रम विभाग में 1 नवम्बर तक नहीं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।